International Journal of Advanced Education and Research
www.multidisciplinaryjournals.net
ISSN: 2455-5746
Received: 10-02-2023, Accepted: 27-02-2023, Published: 14-03-2023
Volume 8, Issue 1, 2023, Page No. 57-58

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. ज्योति गोयल
सहायक प्राध्यापक–दर्शनशास्त्र, शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
पंडित दीनदयाल उपाध्याय विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। वे मानवीय संवेदनाओं और राष्ट्रीय एकता की भावनाओं से ओत–प्रोत थे। उनका व्यक्तित्व एक अद्वितीय राष्ट्रभक्त, समाजसेवी, लेखक, पत्रकार, राजनेता जैसे न जाने कितने आयामों को समेटे हुए था। वे गूढ़ से गूढ़ दार्शनिक बातों को भी आसानी से समझ लिया करते थे। पंडित जी के विचारों की प्रासंगिकता इसी बात से झलकती है कि उन्होंने मानव जीवन के हर पहलू को छुआ, चाहे वो पत्रकारिता हो या राजनीति अथवा समाजसेवा व विकास, हर क्षेत्र में व्यापक जनहित और राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर चिंतन किया। वे भारतीय चिंतन परंपराओं के पोषक तो थे ही, आधुनिक व पश्चिमी चिंतन को भी युगानुकूल व देशानुकूल रूप में उपयोग करने के पक्षधर थे। दीनदयालजी को जनसंघ के आर्थिक नीति के रचनाकार के रूप में देखा जाता है। आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य सामान्य मानव को प्राप्त होने वाला सुख हो, यही पंडित जी का विचार था।[1] विचार – स्वातंत्रय के इस युग में मानव कल्याण के लिए अनेक विचारधाराओं को पनपने का अवसर मिला। इनमें विशेष रूप से साम्यवाद. समाजवाद, पूंजीवाद, अन्त्योदय और सर्वोदय आदि है। लेकिन चराचर जगत् में संतुलन सुन्दरता और मानव समाज को पूर्णता की ओर ले जाने वाला एकमात्र विचार एकात्म मानव दर्शन ही है।[2]

मूल शब्दः पंडित दीनदयाल उपाध्याय, राष्ट्रभक्त, समाजसेवी, लेखक, पत्रकार, राजनेता

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की भारतीय समाज को प्रमुख देन उनका श्एकात्म मानव दर्शनश है। इसका अर्थ है– मानव जीवन तथा सम्पूर्ण प्रकृति के बीच एकात्म सम्बन्ध का होना।[3] पंडित जी ने पाया कि भारतीय विद्वानों ने सृष्टि और मानव जीवन को लेकर गहन चिंतन मनन किया। इसके निष्कर्ष रूप में यह निकला कि सम्पूर्ण सृष्टि में एक आंतरिक एकता है। और इसी को पंडित जी ने अपने चिंतन का केन्द्रिय आधार बनाया। वे कहते हैं कि सृष्टि का स्वरूप बाहर से कितना ही विविधतापूर्ण हो, लेकिन वह आन्तरिक रूप से एकात्मवादी ही है।

शोध प्रविधि
इस शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों का उपयोग कर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य
एकात्म मानव दर्शन व्यक्ति और व्यक्तिक जीवन से सम्बन्धित सभी अंगों को ध्यान में रखकर सम्पूर्ण विचार करता है। मानव शरीर, मन, बुद्धि और आत्म तत्त्व का संकलित रूप है।[4] ये मानव व्यक्तित्व के चार पक्ष हैं जिनकी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भारतीय संस्कृति ने व्यक्ति के सामने कर्तव्य के रूप में चार पुरुषार्थों को आदर्श बना कर रखा है।
मनुष्य के चार पुरुषार्थ है– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। जिनके प्रति मानव कम या अधिक रूप से आकृषित होता है, ये मनुष्य के जीवन को सुखी बनाते हैं और परमतत्व की प्राप्ति में सहायता करते है। भारतीय संस्कृति ने इन चारों पुरुषार्थों का एकत्रित विचार किया है। इनमें धर्म आधारभूत पुरुषार्थ है। अर्थ और काम पुरुषार्थ की साधना धर्म के आधार पर करने से उनकी प्राप्ति सुखदायक होती है और वे व्यक्ति के सर्वागीण विकास में सहायक होकर अंतिम पुरुषार्थ मोक्ष को, अर्थात जीवन के लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।[5]
दीनदयाल उपाध्याय जी यही नहीं रूकते हैं वे व्यक्ति से आगे समष्टि (समाज) की भी बात करते हैं। समाज यूं तो अनेक व्यक्तियों से बनता है, फिर भी समाज को अपना एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व होता है। समाज के भी कई अंग होते हैं और उसे भी इन चारों पुरुषार्थों की साधना करनी पड़ती है। इसलिए व्यक्ति और समाज आपस में एकात्मकता के सम्बन्ध से स्वतः ही जुड़े हुए है।[6] व्यक्ति और समाज की ये पुरुषार्थ साधना एक–दूसरे की विरोधी न होकर पूरक और पोषक है। दीनदयाल जी का समग्र चिंतन इन चारों पुरुषार्थों में निहित एकात्म मानव है।

समाधान
दीनदयाल जी के शब्दों में जिस व्यवस्था में व्यक्ति का विचार पुरुषार्थी मानव के बजाय किसी विशालकाय यंत्र के पुर्जे के रूप में किया जाता है।
वह एक अधूरी व्यवस्था है। व्यक्ति का विचार तो व्यक्ति से लेकर विश्व–मानव तक किया जाना जाना चाहिए, जिसमें परिवार, समाज, राष्ट्र आदि विविध एकात्म समूह शामिल हो और उनसे भी परे परमेष्ठी से तादात्म स्थापित करने की क्षमता रखने वाला एकात्म मानव हो।[7]
पंडित जी व्यक्ति और समाज (समष्टि) में कोई अन्तर नहीं मानते हैं। जहाँ वे व्यक्ति की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति को जरूरी मानते हैं। वहीं यह भी मानते हैं कि मात्र भौतिक आवश्यकताओं की संतुष्टि से ही व्यक्ति सुख एवं आनन्द नहीं प्राप्त कर सकता है। उसके लिए आध्यात्मिक आनन्द की आवश्यकता है, जो व्यक्ति को समाज में रहकर और समाज को व्यक्ति विशेष को साथ लेकर चलने से ही प्राप्त होगी।[8]
पंडित जी का चिंतन व्यक्ति और समाज पर ही नहीं रुकता, इसके आगे वे राष्ट्र और वैश्वीक परिदृश्य पर भी अपने विचार रखते हैं। अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को उन्होंने चिति का नाम दिया है।[9] उनके अनुसार यह चिति ही अपने को व्यक्त करने के लिए राष्ट्र और राष्ट्र के अन्तर्गत आने वाले अनेकानेक संस्थाओं का निर्माण करती है। यहाँ प्रश्न उठता है कि चिति कैसे राष्ट्र का निर्माण करती है? असल में जब कोई देश परतन्त्र होता है तो उस देश के नागरिक उसकी स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करते है और अपनी देश भक्ति का परिचय देते है और जब वह देश आजाद हो जाता है तब उसदेश या राष्ट्र का पुनः निर्माण करना, उसे आर्थिक, सामाजिक रूप से सुदृढ़ बनाना और अपनी सभ्यतानुसार विकसित करना ही 'चित्ति' है।[10]

चित्ति ही राष्ट्रत्व का द्योतक है। यह जन समूह के देश विशेष में रहने के कारण उसकी संस्कृति, साहित्य और धर्म में व्यक्त होती है। दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार किसी भी राष्ट्र की एकता के मूल कारण संस्कृति, सभ्यता, धर्म भाषा आदि स्वयं एकता के कारण न होकर मूल कारण चिति के व्यक्त परिणाम है। यह देश को रचनात्मक देश भक्ति की ओर ले जाने वाला विशेष दृष्टिकोण है।

कोई भी राष्ट्र विश्व पटल पर कहाँ ठहरता है इसकी पहचान उसकी अर्थव्यवस्था से होती है। अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में पंडित जी का चिंतन उच्चकोटि का तथा परिस्थितियों के अनुरूप हैं। इसका महात्मा गांधी के अर्थ चिंतन से अदभूत तादात्म्य है।[11]

पंडित जी मानते हैं कि किसी भी देश की अर्थव्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो मानव के मानव तत्त्व को समाप्त न कर सके। अर्थव्यवस्था का मानव जीवन पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। उच्च आर्थिक स्थिति का लक्ष्य ऐसा बनाया जाना चाहिए जिसमें मनुष्य का सर्वागीण विकास तथा राष्ट्र की उन्नति स्वभाविक रूप से होती रहे।[12] अर्थव्यवस्था का लक्ष्य ऐसा हो जिसमें लोगों के भरण–पोषण एवं राष्ट्र की धारणा के लिए ऐसे भौतिक साधनों का उत्पादन होना चाहिए, जिनकी आवश्यकता हो। वर्तमान में यह प्रश्न प्रासंगिक हो गया है कि उत्पादन उपभोग का अनुसरण करे या उपभोग उत्पादन का।

पश्चिम की सोच कहती है कि आदमी की अनंत इच्छाएँ है और उनकी निरन्तर पूर्ति होनी चाहिए पहले इच्छा जन्म लेती है, फिर उसको पूरा करने के साधन जुटाए जाते हैं। आज की सोच में जो कुछ पैदा किया जा रहा है, उसके उपभोग की इच्छा भी पैदा की जाती है। बाजार के लिए माल पैदा करने की जगह माल के लिए बाजार तैयार किया जाता है। पंडित जी के अनुसार यह स्थिति मानव प्रकृति के प्रतिकूल है।

इसी तरह पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रकृति के संतुलित दोहन और अन्तिम व्यक्ति तक साधनों के पहुँच के पक्षधर थे। उनके अनुसार प्राकृतिक सम्पदा सीमित है। यदि हमने इन सीमित साधनों का असीमित दोहन किया तो ये लम्बे समय तक हमारा साथ नहीं दे पाएगे। ऐसी स्थिति में हमारे हाथ सिर्फ पछतावा ही रहेगा। प्रकृति ने अपनी सभी वस्तुओं के बीच एक तालमेल बना रखा है, जिसे मनुष्य के अत्यधिक हस्तक्षेप ने बिगाड़ दिया है। हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए जितने कि वह पूर्ति कर सकें। पंडित जी के अनुसार मशीनों का उपयोग सहायक के रूप में होना चाहिए प्रतिस्पर्धी के रूप में नहीं। मशीनों के अधिक इस्तेमाल से यदि बेरोजगारी बढ़ती है तो उसका उपयोग नहीं होना चाहिए। जैसे किसी कारखाने की पूर्ण उत्पादन क्षमता का उपयोग नहीं हो रहा है तो यह घाटे का सौदा है, उसी तरह मनुष्य का बेकार रहना भी मानव समाज के लिए घाटे का सौदा है।[13]

पंडित जी के शब्दों में हमें कमाने वाला खाएगा की जगह खाने वाला कमाएगा का लक्ष्य रखकर भारत की नई अर्थ संरचना का निर्माण करना चाहिए। वे चाहते थे कि नया युग कर्मठता (श्रम) का युग हो।[14]

इस प्रकार पंडित जी ने अपनी छोटी सी जीवन यात्रा में मानव जीवन के हर क्षेत्र पर विचार किया। फिर चाहे वे सामाजिक हो, आर्थिक हो या रानीतिक। उन्होंने राजनीति को सुचिता, सेवा व राष्ट्रीय सामाजिक चेतना का उपकरण माना था. सत्ता की सीढ़ी नहीं। आज जहाँ सत्ता को पाने के लिए नैतिकता की सभी सीमाएँ तोड़ दी जाती हैं, वहीं दीनदयाल उपाध्याय जी का ये प्रसंग उनके राजनैतिक चिंतन को समझने के लिए पर्याप्त है।

जब जौनपुर से लोकसभा का चुनाव लड़ते समय उन्हें कहा गया कि यह ब्राह्मण बहुत सीट है. इसलिए चुनाव प्रचार में आपके ब्राह्मण होने को प्रचारित कर ब्राह्मण सम्मेलन कराए जाएँ तो आसानी से चुनाव जीत जाएँगे।

निष्कर्ष

इस पर दीनदयाल जी ने कड़ाई से मना करते हुए कहा– 'भले ही इससे में चुनाव जीत जाऊँ, लेकिन जनसंघ हार जाएगा।' वे चुनाव हार भी गए, लेकिन उन्होंने जनसंघ के राजनैतिक श्ईथिक्सश को एक नई परिभाषा दी।[15] एक बार दीनदयाल जी ने कहा था कि यदि पार्टी नेतृत्व किसी भी कारण से गलत उम्मीदवार खड़ा कर दे तो कार्यकर्ताओं की यह जिम्मेदारी है कि उसे हरा दें।[16] ऐसा था दीनदयाल जी का राजनैतिक दर्शन जो श्देशहितश को सर्वोपरि मानता था। अपने जीवन विचार दर्शन और व्यवहार से वे पूर्णतः ऋषि परम्परा के व्यक्ति थे। वेदों में कहा गया है–भ्रदं पश्यन्ति ऋषयः।[17]

अर्थात् जो लोक कल्याण देखे, उसका चिंतन करें और उस पर चलने का मार्ग बताए वह ऋषि है। और ऐसे ही ऋषि रहें हैं पंडित दीनदयाल उपाध्याय । जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लोककल्याण के लिए समर्पित कर दिया।

संदर्भ सूची

1. मध्यप्रदेश संदेश, सितम्बर, 2015 जनसम्पर्क संचालनालय प्रकाशन शाखा, जनसंपर्क भवन, बाणगंगा, भोपाल, पृ. 74.
2. पं. दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानव दर्शन एवं उनका व्यवहारिक प्रयोग, चित्रकूट प्रकल्प, विशेष चिंतन श्री मा. स. गोलवकर (गुरुजी), श्री दत्तोपंत ठेंगडी, प्रकाशन – दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली, पृ. 12.
3. पं. दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति दर्शन, सम्पादक कमल किशोर गोयनका प्रकाशन दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1972, पृ. 25.
4. पं. दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानव दर्शन एवं उनका व्यवहारिक प्रयोग, चित्रकूट प्रकल्प, विशेष चिंतन – – दत्तोपंत ठेंगडी, प्रकाशन – श्री मा. स. गोलवकर (गुरुजी), श्री दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली, पृ. 19.
5. उपरिवत पृ. 24.
6. पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन खण्ड–2, एकात्म मानव दर्शन, विनायक वासुदेव नेने अनुवादक मोरेश्वर तपस्वी, प्रकाशन सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986, पृ. 6 पृष्ठभूमि.
7. राष्ट्र चिन्तन – पं. दीनदयाल उपाध्याय, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण 2006, पृ. 81.
8. पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन खण्ड–2, एकात्म मानव दर्शन, विनायक वासुदेव नेने अनुवादक मोरेश्वर तपस्वी, पृ. 72
9. राष्ट्र चिन्तन 1 पं. दीनदयाल उपाध्याय, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण 2006. पृ. 101.
10. उपरिवत्, पृ. 102.
11. मध्यप्रदेश संदेश, सितम्बर, 2015, जनसम्पर्क संचालनालय प्रकाशन शाखा, जनसंपर्क भवन, बाणगंगा, भोपाल, पृ. 75.
12. पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन खण्ड–2, एकात्म मानव दर्शन, – विनायक वासुदेव नेने अनुवादक मोरेश्वर तपस्वी, प्रथम संस्करण सितम्बर 1986 पृ. 104.
13. पं. दीनदयाल उपाध्याय रू व्यक्ति दर्शन, सम्पादक कमल किशोर गोयनका प्रकाशन दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1972, पृ. 71,
14. मध्यप्रदेश संदेश सितम्बर 2015, पृ. 73–78.
15. रोजगार और निर्माण 25.09.2017 से 01.10.2017 मध्यप्रदेश माध्यम 40, प्रशासनिक क्षेत्र, अरोरा हिल्स, भोपाल, पृ. 3..
16. पंडित दीनदयाल उपाध्याय – विचार दर्शन खण्ड–2, एकात्म मानव दर्शन, विनायक वासुदेव नेने अनुवादक मोरेश्वर तपस्वी, प्रथम संस्करण सितम्बर 1986, पृ. 87.
17. रोजगार और निर्माण – 20.09.2017 से 01.10.2017, पृ. 3